पंजीयन क्रं. 06/09/01/04737/04

विचार मासिक पत्रिका

कुल पृष्ठ 24, वर्ष 4, अंक 48 माह - दिसंबर 2022, मूल्य - निःशुल्क

विचार मासिक पत्रिका की चतुर्थ वर्षगांठ

आपके विकास को समर्पित

॥ विचार समिति ॥

(स्थापना वर्ष 2003)

संयुक्त राष्ट्र बैठक में विचार समिति सचिव आकांक्षा मलैया

पदाधिकारी

कपिल मलैया
संस्थापक व अध्यक्ष
मो. 9009780020

सुनीता जैन
कार्यकारी अध्यक्ष
मो. 9893800638

सौरभ रांधेलिया
उपाध्यक्ष
मो. 8462880439

आकांक्षा मलैया
सचिव
मो. 9165422888

विनय मलैया
कोषाध्यक्ष, मो. 9826023692

नितिन पटैरिया
मुख्य संगठक, मो. 9009780042

अखिलेश समैया
मीडिया प्रभारी, मो. 9302556222

हरगोविंद विश्व
मार्गदर्शक

राजेश सिंघई
मार्गदर्शक

श्रीयॉश जैन
मार्गदर्शक

गुलझारीलाल जैन
मार्गदर्शक

प्रदीप रांधेलिया
मार्गदर्शक

अंशुल भार्गव
मार्गदर्शक

डॉ. स्वप्निल बी. मंत्री
मार्गदर्शक

विचार समिति का मासिक प्रकाशन

विचार मासिक पत्रिका

वर्ष - 4, अंक - 48, दिसंबर - 2022

संपादक

आकांक्षा मलैया

प्रबंधक व प्रकाशक

विचार समिति

स्वामित्व

विचार समिति

258/1, मालगोदाम रोड, तिलकगंज वार्ड,
आदिनाथ कार्स प्रा. लिमि.
के पीछे, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

Email: sanstha.vichar@gmail.com
Phone: 9575737475
07582-224488

मुद्रण

तरूण कुमार सिंघई, अरिहंत ऑफसेट
पारस कोल्ड स्टोरेज, बताशा गली,
रामपुरा वार्ड, सागर (म.प्र.)
पिन - 470002

इस अंक में

1. विचार समिति एक परिचय 4
2. विचार समिति के 19 वर्षों के विकास कार्य 5
3. विचार गोमय परियोजना संरचना 6
4. प्राकृतिक गोमय उत्पाद : अनुसंधान से उपभोक्ता तक 7
5. संयुक्त राष्ट्र बैठक में गोमय से बने उत्पादों की संयुक्त राज्य अमेरिका, फिजी एवं अन्य देशों के प्रतिनिधियों द्वारा की गई सराहना 9
6. नई दिल्ली में एशिया का सबसे बड़ा सोशल इम्पैक्ट फोरम इंडिया सीएसआर समिट 2022 में विचार समिति की सहभागिता.................... 9
7. छह शासकीय विद्यालयों में गुणात्मक शिक्षा हेतु संस्था ले रहीं कक्षाएं 10
8. शिक्षकों की मेहनत से बच्चों में सीखने की इच्छा रंग लाई............................ 11
9. समिति ने शिक्षा से वंचित बच्चों की शिक्षा के आर्थिक सहयोग के लिए चलाया अभियान 11
10. क्वेस्ट एलाइंस व विचार समिति के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय वर्चुअल प्रशिक्षण में 65 शिक्षकों ने लिया हिस्सा.....................12
11. कौशल विकास मेला में समिति ने लगाया गोमय उत्पादों का स्टॉल.............................. 13
12. मीडिया कवरेज 14
13. सहयोगी संस्थान 15

विचार समिति एक परिचय

॥ विचार समिति ॥
(स्थापना वर्ष 2003)

जमीनी स्तर पर संयुक्त राष्ट्र एसडीजी लक्ष्यों का स्थानीयकरण

परिचय :-

विचार समिति मध्य प्रदेश के सागर जिले के समग्र विकास के लिए कार्यरत एक गैर सरकारी संगठन है। समिति 5000+ सक्रिय स्वयंसेवकों के साथ, जमीनी स्तर पर स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, देखभाल और स्वच्छता में 360 डिग्री विकास के माध्यम से ग्रामीण और साथ ही शहरी क्षेत्रों में जीवन को सशक्त बनाने पर कार्यरत है। हमारा उद्देश्य सतत विकास के लिए एक मॉडल तैयार करना है जिसे पूरे देश और विश्व स्तर पर बढ़ाया जा सके। हम सिर्फ उदेश्य जागरूकता पैदा करना नहीं, बल्कि प्यार और विश्वास से जुड़े लोगों के एक नेटवर्क के माध्यम से लोगों को अपने जीवन में सुधार लाने के लिए प्रेरित करना है।

विजन :-

लोगों के जीवन के पारिस्थितिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं में सुधार करना और उनके जीवन में तत्काल और स्थायी परिवर्तन प्राप्त करना।

लक्ष्य :-

मध्य प्रदेश के सागर जिले में शुरू में बेहतर जीवन स्तर के लिए समग्र विकास के लिए जागरूकता और सामाजिक कार्रवाई के माध्यम से सतत, सहभागी विकास का एक मॉडल तैयार करना।

विचार समिति के 19 वर्षो के विकास कार्य

1 NO POVERTY

- 1185 निर्धन महिलाओं को प्रति दिन ₹500+ कमाने योग्य बनाया।
- 750+ युवाओं के लिए कैरियर-जागरूकता कार्यशाला।

2 ZERO HUNGER

- कुपोषण मुक्त भारत के लिए 150+ एनीमिया शिविर ।
- कोविड महामारी के दौरान 1980 राशन किट बांटी गई ।

3 GOOD HEALTH AND WELL-BEING

- 24×7 रक्तदान हेल्पलाइन ।
- 300+ रक्तदान शिविर ।
- 24×7 अंतिम संस्कार वाहन सेवा ।
- 25 योग केंद्र ।

4 QUALITY EDUCATION

- 765 स्कूल छोड़ चुके बच्चों को बुनियादी साक्षरता और अंक ज्ञान दिया।
- 10,000+ किताबों वाली लाइब्रेरी ।

5 GENDER EQUALITY

- महिलाओं से संबंधित अपराधों को रोकने के लिए 83000 लोगों को जागरूक किया।
- दुर्व्यवहार और भेदभाव से पीड़ित महिलाओं के लिए सहायता समूह।

6 CLEAN WATER AND SANITATION

- स्कूलों और ग्रामीण क्षेत्र में 11500 लोगों के लिए स्वच्छ जल की व्यवस्था की ।
- जल प्रबंधन प्रशिक्षण ।
- 350+ वर्षा जल संचयन संयंत्र बनायें।

7 AFFORDABLE AND CLEAN ENERGY

- सौर पैनल स्थापना से संबंधित कानूनी अनुपालन पर नीतिगत अनुशंसा ।

8 DECENT WORK AND ECONOMIC GROWTH

- 1085 महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण ।
- उद्यमिता विकास कार्यक्रम ।

9 INDUSTRY, INNOVATION AND INFRASTRUCTURE

- पर्यावरण के अनुकूल गाय के गोबर के उत्पाद पर अनुसंधान एवं विकास
- उद्यमियों के लिए सूक्ष्म वित्त की सुविधा ।

10 REDUCED INEQUALITIES

- सामाजिक एकता के लिए 31,000 लोगों के साथ सबसे लंबी तिरंगा मानव श्रृंखला का विश्व रिकॉर्ड बनाया।

11 SUSTAINABLE CITIES AND COMMUNITIES

- 3000+ किचन गार्डन बनवाए ।
- प्रति वर्ष 1500+ लोगों को जैविक खेती करने का प्रशिक्षण दिया जाता है ।

12 RESPONSIBLE CONSUMPTION AND PRODUCTION

- 7,00,000 इको-फ्रेंडली गाय के गोबर के उत्पादो का विक्रय ।
- सिंगल यूज प्लास्टिक के दुष्परिणाम हेतु जागरूकता अभियान।

13 CLIMATE ACTION

- 1,00,000 सीड बॉल रोपण।
- 30,000 पौधे मियावाकी पद्धति और वृक्षारोपण के तहत रोपित ।

14 LIFE BELOW WATER

- जैव-एंजाइम और खाद बनाने में गीले एवं सूखे कचरे का उपयोग ।
- भारत के उपराष्ट्रपति द्वारा शाकाहार के अभियान पर सम्मानित किया गया।

15 LIFE ON LAND

- 250+ गायों को संरक्षण।
- 35,000 किलो मिट्टी को अनउपजाऊ होने से बचाया ।

16 PEACE, JUSTICE AND STRONG INSTITUTIONS

- मुफ्त कानूनी सहायता सेवा ।
- अहिंसा अभियान के पश्चात् सागर को भारत का सबसे सुरक्षित शहर घोषित किया गया ।

17 PARTNERSHIPS FOR THE GOALS

- सरकारी, गैर सरकारी संगठनों और कॉर्पोरेट्स के साथ ज्ञान और संसाधन भागीदारी ।

विचार गौमय परियोजना संरचना

01 परिचय एवं उसका स्वरूप

शुभारंभ - 2020
- गोबर से दिये एवं अन्य उत्पाद बनाना ।
- 3 वर्षों से सफलता पूर्वक संचालित ।
- सामग्री निर्माण में पूर्ण आत्मनिर्भर ।
- 1000+ महिलाओं को स्वरोजगार मिला ।

02 उद्देश्य

- स्वरोजगार
- प्रकृति संरक्षण
- गौसेवा
- स्वदेशी उत्पादों को बढावा देना

03 हमारा पूर्व अनुभव

- प्रथम चरण - 44 महिलाएं - 50 हज़ार दिया ।
- द्वितीय चरण - 500 महिलाएं - 5 लाख दिया ।
- 750+ महिलाओं ने रोजगार प्राप्त किया ।
- 80% दियों को 11 राज्य 75 शहरों, स्थानीय क्षेत्रो में विक्रय
- कमिया : डिज़ाइन, दिया स्वरुप, नीतिया ।

04 2022 निर्माण प्रक्रिया :
(दिसंबर से फरवरी)

- 250+ महिलाओं का दो दिवसीय प्रशिक्षण।
- 2000+ परिक्षण पश्चात् आग न पकड़ने वाले दिये।
- 25+ट्राली गोबर गौशाला से लिया गया गोबर ।
- 50+ मोहल्लों में गोमय सामग्री मिश्रण पहुचाया ।
- समिति सहियोगियों द्वारा प्रशिक्षणजारी।

05 दिया एकत्रीकरण एवं कलाकृति
(मार्च से मई)

- 4+ लाख दिये एकत्रित ।
- 350+ महिलाओं को सुंदर कलाकृति हेतु प्रशिक्षण ।
- 1.5 लाख दिये विक्रय हेतु तैयार।
- दियों की नई डिज़ाइन (आकार) हेतु प्रशिक्षण शुरु ।
- महिलाओं को 10+ लाख रुपयों का भुगतान ।

06 गोबर उत्पादों का विक्रय
(जून से अक्टूबर)

- विक्रय हेतु पैकेजिंग एवं तैयारिया ।
- स्थानीय स्तर पर 50+ प्रदर्शनीया।
- 13 राज्य, 90 शहरों में विक्रय हुआ ।
- 75% से अधिक गोमय उत्पादों का विक्रय ।

07 आगामी परियोजना क्रियान्वयन
नवंबर से ....

- अन्य उत्पाद- दीवाल घड़ी, मोमेंटो, धूपबत्ती, मुर्तिया, बंधनवार उत्पादों पर कार्य जारी।
- खादी इण्डिया - फैब इण्डिया, ट्राइब्स इण्डिया से मोहल्ला विकास टीमों को जोड़ना ।

08 लक्ष्य

- 50 लाख गोबर दिया बनाना।
- 5+ देशों में गोबर दियों की पहुच बनाना ।
- 15 राज्य, 200 शहर में पहुच

https://samitivichar.stores.instamojo.com/

प्राकृतिक गोमय उत्पाद

अनुसंधान से उपभोक्ता तक

1185
से अधिक महिलाओं को स्वरोजगार प्राप्त हुआ है

300
से अधिक गायों को संरक्षण मिला

3500
कि.ग्रा. से अधिक मिट्टी को अनुपजाऊ होने से बचाया

समस्या - सागर शहर लघु उद्योग का शहर रहा है, उद्योग में मुख्यतः बीड़ी उद्योग, दोना-पत्तल, लकड़ी की कलात्मक वस्तु, अगरबत्ती उद्योग, मिट्टी के बर्तन उद्योग आदि। बीते दशकों से इन उद्योगों में भारी मात्रा में कमी आई है। इसके साथ ही कुछ उद्योग तो स्वास्थ्य एवं प्राकृतिक रूप से हानिकारक सबित हो रहे है। सामान्यतः इन उद्योगों से जीवन-यापन चल जाता लेकिन अपनी सामान्य सुख-सुविधाओं की जरूरतें पूरी नहीं हो पाती। समिति द्वारा संचालित मोहल्ला विकास में 12,500 परिवारों में ऐसे सैकड़ों परिवार प्रभावित थे। सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि यह आर्थिक रूप से पिछड़े परिवारों को कौन से उद्योग से जोड़ा जाए। मिट्टी संबंधित मुद्दे थे, लेकिन मिट्टी को पकाकर बनाये जाने वाली वस्तुओं को पुनः उपजाऊ होने में 80 वर्ष का समय लग जाता है, मिट्टी को उर्वरतापूर्ण बनाये रखना भी एक मुख्य समस्या बनती जा रही थी। गायों को केवल दूध के व्यापार के लिए ही बची थीं उसके बाद में उन्हें आवारा छोड़ दिया जाता है। इन सभी समस्याओं देखते हुए आवश्यकता थी।

समाधान - स्थानीय स्तर पर ऐसे उत्पादों पर कार्य किया जाए जिनसे स्वरोजगार को बढ़ावा मिले। उत्पादन के स्रोत भरपूर मात्रा में उपलब्ध हों, ऐसी वस्तुएं जो अपशिष्ट रहित हों, वातानुकूलित हों, गाय के गोबर से बनने वाली सामग्री हमें काफी प्रभावी रूप से कारगर लगी।

गोमय परियोजना का शुभारंभ - प्रथम वर्ष 2020 - समिति ने स्वालंबन योजना के अंतर्गत गोबर से पूर्ण प्राकृतिक स्वदेशी उत्पाद बनाने, स्थानीय स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए परियोजना पर कार्य करना शुरू किया था। प्रशिक्षण के लिए उत्तर प्रदेश से सहकार भारती के मार्गदर्शन में 150 महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया था। महिलाओं ने गाय के गोबर से दीपक, भगवान गणेश, लक्ष्मी जी की प्रतीकात्मक मूर्तियां, स्वास्तिक, श्री, गमला, बंदनवार आदि वस्तुओं को सांचा के माध्यम से बनाना सीखा था। इसके पश्चात 44 महिलाओं ने 50,000 से अधिक गोबर के दिये बनाये। लोगों ने गोबर से दियों को काफी पसंद किया एवं नए प्रकार के उत्पादों को लेकर जिज्ञासा भी प्रकट की। हमारे सामने नए उत्पादों को बनाने की एक नई चुनौती थी।

द्वितीय वर्ष 2021 - प्रथम वर्ष दीये बनाने की प्रक्रिया में आई कमियों को ध्यान में रखते हुए पूरी

कार्यप्रणाली तैयार की गई। 750 महिलाओं को गोबर से बनाई जाने वाली सामग्री का प्रशिक्षण दिया गया। सभी महिलाओं ने 500000 से अधिक गोबर के दिए बनाए इसके साथ ही शुभ, लाभ, बंदनवार के साथ अन्य उत्पादों को बनवाया गया। 80 प्रति. गोमय दियों का विक्रय 11 राज्यों 75 शहरों एवं स्थानीय स्तर पर किया गया। हमारे पास गोबर से निर्मित सामग्री और बनाने की नए-नए फैशनेबल डिजाइनिंग को लेकर फीडबैक आय थे।

तृतीय वर्ष 2022- हम 2 वर्षों के अच्छे अनुभव के साथ गोबर दिया परियोजना पर कार्य कर रहे थे इसी बीच बाजार की स्थिति को समझा और तीसरे चरण की दिसंबर माह से दिया प्रशिक्षण हेतु स्वानंद गोविज्ञान संस्थापक जितेंद्र भकने के मार्गदर्शन में दो दिवसीय शिक्षण में 250 महिलाओं ने गोबर से बनी सामग्री के अनुप्रयोग सीखे। प्रशिक्षण उपरांत भी हम दिए के जलने की समस्या से जूझ रहे थे। फिर भी हमारे परीक्षण जारी थे।

2000 से अधिक परीक्षण के बाद हमें न जलने वाले दिए बनने में सफलता मिली। नये तरीकों के शानदार डिजायन के साथ अन्य सामग्री निर्मित की गई। समिति प्रशिक्षकों ने लेदरानाका, बाघराज, बीड़ी कॉलोनी, राजीव नगर, तिलक गंज, बाघराज वार्ड, पंढापुरा, पंतनगर, सुभाष नगर, शास्त्री वार्ड, रामबाग मंदिर, बड़ा बाजार, ग्राम मोठी सहित कई स्थानीय क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया। विचार कार्यालय में 500 से अधिक महिलाओं को प्रशिक्षित किया। फरवरी आते-आते सभी महिलाओं तक दीए बनाने की सामग्री एवं उनके बनाए हुए दिए लाने के लिए पूरी टीम कर्मठता से लगी हुई थी। हम लगभग 40 से अधिक हजार का आंकड़ा एक माह में ही पार करने वाले थे। मार्च माह में लगभग मोहल्ला विकास की सभी टीमों के साथ स्व सहायता समूह की महिलाओं ने अच्छी मात्रा में दिए बना लिए थे।

महिलाओं द्वारा बनाए गए गुणवत्तापूर्ण दिए टीम द्वारा एकत्र किए जाते हैं। अब जरूरत थी इन दियों पर कलर एवं उच्च स्तर की कलाकृतियां करने की, जिसके लिए महिलाओं को विचार कार्यालय में प्रशिक्षण दिया गया। महिलाएं लगातार सीख रही थी इस प्रशिक्षण में लगभग 300 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया । अप्रैल से मई माह के लगभग 4 लाख दिये तैयार हो चुके थे जिन्हें कलर एवं सुन्दर कलाकृतियों के लिये 350 महिलाएं को प्रशिक्षण दिया गया। जुलाई माह में रंग-बिरंगे दिये तैयार हो गए। पैकेजिंग का कार्य शुरू हो गया। भारत के राज्यों एवं विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शनी लगाई गईं। सितंबर-अक्टूबर माह के प्रारंभ से हमारे पास दीयों के आर्डर आने लगे थे महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, हरियाणा, राजस्थान, झारखंड, आंध्र प्रदेश, बिहार आदि 13 राज्यों सहित 90 से अधिक शहरों गोमय दियों की मांग आई। एक बार उपयोग करने के बाद पुनः लोगों के आर्डर आ रहे थे।

हमारा लक्ष्य - हम बुंदेलखंड को सामाजिक, बौद्धिक, आर्थिक पिछड़ेपन से उबारने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं। महिला सशक्तिकरण की दिशा में उनके लिए आय के साधन, उत्तम स्वास्थ्य, जागरूकता संबंधी अभियान उनकी आवाज को मंच प्रदान करने का पुरजोर प्रयास कर रहे हैं। गोमय दिया परियोजना का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह रहा कि इस परियोजना में 5000 से अधिक महिलाओं को जोड़कर अपने जीवन को बदलने का प्रयास किया है इसके साथ ही हम उनके लिए खादी इंडिया, फैब इंडिया आदि विभिन्न प्रोजेक्टों से जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। हम चाहते हैं कि शिक्षित समाज के साथ सशक्त समाज का निर्माण हो। हमारा लक्ष्य अगले वर्ष 50 लाख गोबर से बने दीयों का निर्माण कर उन्हें 5 अन्य देशों के साथ भारत के 15 राज्यों एवं 200 से अधिक शहरों में इन दियों की जागरूकता पहुंचे। समूचा बुद्धि वर्ग इस बात को स्पष्ट रूप से समझ सकता है कि निरंतर अपशिष्ट उत्पादों से ही हम अपने क्षेत्र के पारिस्थितिक तंत्र को ख़राब कर रहे है। आवश्यकता है हम सभी प्राकृतिक उत्पादों को बढ़ावा दें। आप सभी के सहयोग से यह संभव है।

संयुक्त राष्ट्र बैठक में गोमय से बने उत्पादों की संयुक्त राज्य अमेरिका, फिजी एवं अन्य देशों के प्रतिनिधियों द्वारा की गई सराहना

बैंकाक में आयोजित बैठक में विचार समिति सचिव आकांक्षा मलैया शामिल हुईं

सागर शहर के लिए गौरव की बात है कि विचार समिति सचिव आकांक्षा मलैया को बैंकाक में आयोजित सातवें मंत्रिस्तरीय अंतर्राष्ट्रीय गोलमेज बैठक 29 से 1 दिसंबर 2022 बैठक में शामिल हुई। एशिया और प्रशांत क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग और एकजुटता के माध्यम से हमारे ग्रह की रक्षा विषय पर यह बैठक आयोजित की गई है। संयुक्त राष्ट्र की बैठक में आकांक्षा मलैया ने विचार समिति द्वारा 12,500 परिवारों में 17 एसडीजी लक्ष्यों को पूर्ण करने पर कैसे कार्य किया जा रहा है, इसके बारे में ब्यौरे बार जानकारी दी साथ ही प्रकृति संरक्षण, स्वरोजगार के प्रभावी समाधान के रूप में गाय के गोबर से बने उत्पादों को प्रदर्शित किया।

संयुक्त राज्य अमेरिका, फिजी एवं अन्य देशों के प्रतिनिधियों द्वारा इस पहल की सराहना की गई।

नई दिल्ली में एशिया का सबसे बड़ा सोशल इम्पैक्ट फोरम इंडिया सीएसआर समिट 2022 में विचार समिति की सहभागिता

समिति सचिव आकांक्षा मलैया एवं समिति देशप्रमुख भुवनेश सोनी सीएसआर बॉक्स में हुये शामिल

इंडिया सीएसआर समिट देश का सबसे बड़ा कॉर्पोरेट सोशल रिस्पांसिबिलिटी मंच है। इंडिया सीएसआर समिट का 9वां सम्मेलन 15 और 16 नवंबर 2022 को पुलमैन होटल नई दिल्ली में आयोजित किया गया। जिसमें भारत में स्थित बड़ी औद्योगिक कंपनियां अपने आय का कुछ हिस्सा सामाजिक जिम्मेदारी को पूर्ण करने के क्षेत्र में खर्च करती हैं। सामाजिक रूप से बदलाव लाने हेतु कार्यरत गैर सरकारी संगठन, व्यक्तिगत प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए यह कंपनियां एक साथ कार्य करती हैं। इंडिया सीएसआर समिट 2022 में 2300 से अधिक प्रतिनिधियों, 180 विशेषज्ञों और 45+ सत्रों के माध्यम से विकास से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की गई।

सीएसआर समिट 2022 के बारे में समिति सचिव आकांक्षा मलैया ने अपना अनुभव बताया कि सम्मेलन सामाजिक विकास के प्रतिनिधियों को एक साथ लाता है। इसके साथ ही उन्होंने विचार समिति द्वारा पर्यावरण, शिक्षा, स्वरोजगार, महिला सशक्तिकरण आदि के क्षेत्र में समिति द्वारा किये गये कार्यों को एनजीओ बाक्स के माध्यम से प्रस्तुत किया। समिति देशप्रमुख भुवनेश सोनी ने कहा यह अवसरों का लाभ उठाने, बेहतर प्रदर्शन करने, आर्थिक सहयोग के बारे में है।

छह शासकीय विद्यालयों में गुणात्मक शिक्षा हेतु संस्था ले रहीं कक्षाएं

शासकीय स्कूलों में शैक्षणिक गुणवत्ता पर चर्चा करते हुए समिति सचिव आकांक्षा मलैया

समिति शैक्षिक गुणवत्ता एवं बच्चों की निरंतरता बनाये रखने के लिए शहर के 6 प्राथमिक शासकीय स्कूलों के साथ लीफी फैलोशिप अभियान अंतर्गत 'स्कूल चलें हम' अभियान अंतर्गत कक्षाएं प्रारंभ की जा रही है। अभियान की जानकारी देते हुए सचिव आकांक्षा मलैया ने बताया कक्षा 1 से 5 तक के स्कूली अध्ययनरत बच्चों के लिए यह कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है। जिससे उनके सीखने की प्रक्रिया में तेजी आये। कई शोध यह सिद्ध कर चुके है बाल्यकाल में ही बच्चों के 80 से 85 प्रति. मस्तिष्कीय विकास हो जाता है। यह बहुत महत्वपूर्ण समय है बच्चों के सीखने का। उसी क्षेत्र के होनहार योग्य युवाओं को चयन प्रक्रिया के बाद तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया जाएगा।

लीफी परिक्षेत्रीय प्रबंधक संजना जी ने बताया कि प्राथमिक स्कूल में हमारा छोटा सा प्रयास है कि जो चार माह तक संचालित रहेगा जिसमें बच्चों को स्कूलों में नियमित करना एवं उनके सीखने के स्तर में सुधार करना है।

शिक्षा अभियान सहयोगी पूजा लोधी ने जानकारी दी कि स्कूलों के साथ हमने बच्चों के माता-पिता से मुलाकात की और बच्चों की शिक्षा की स्थिति को जाना। इसके साथ-साथ कई मुद्दों पर बातचीत की। अधिकांश बच्चों के माता-पिता आजीविका के लिए या अन्य कार्यों में संलग्न है। बच्चे छोटे होने के कारण उनको या तो साथ ले जाते हैं या घर पर छोड़ जाते हैं, स्कूल तक बच्चे पहुंचते ही नहीं हैं एवं घर पर उनकी शिक्षा की समुचित देखभाल नहीं हो पाती। यह बहुत महत्वपूर्ण पक्ष है इन बच्चों की शिक्षा का। इस मुहिम में वे बच्चे शामिल है जो स्कूल में नामांकित हैं पर स्कूल नहीं जाते हैं और स्कूल जाते हैं तो सीखने की गति धीमी है। हम बच्चों को आजीवन सीखने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

वर्चुअल माध्यम से तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया

शासकीय स्कूल शिक्षकों के साथ नव चयनित शिक्षकों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण के माध्यम से संपूर्ण क्रिया प्रणाली पर विस्तृत चर्चा की गई। लिफि संस्थापक रमन बहल ने शिक्षकों के परिचय पश्चात उन्होंने कहा हम मुख्य रूप से हम बच्चों को सिखाने की दिशा में कार्य कर रहे हैं।

शिक्षकों की मेहनत से बच्चों में सीखने की इच्छा रंग लाई

बच्चों के स्कूल से बाहर होने की समस्या बहुस्तरीय और बहुआयामी है और इसे भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए सबसे कठिन चुनौतियों में से एक माना जाता है। 2017-2018 में हमारे पास लगभग 3.22 करोड़ बच्चे थे जो एनएसएसओ के आंकड़ों के अनुसार स्कूल से बाहर थे। स्कूली बच्चों की एक बड़ी आबादी के साथ हमारा देश जनसांख्यिकीय लाभांश खो देता है। यह हिंसा और शोषण के लिए बच्चों के जोखिम को बढ़ाता है। इसके साथ ही कम उम्र में विवाह, बाल श्रम, उनके सीखने और विकास के लिए आवश्यक है एक उचित शिक्षा प्रणाली, जो उनके लिए कारगर हो। इस समस्या से निपटने के लिए सामूहिक सहयोग की आवश्यकता है। व्यक्तिगत स्तर के साथ संस्थागत, शासकीय रूप से प्रयास किये जाने चाहिए। समिति लीफी फैलोशिप अभियान अंतर्गत पिछले चार माह से 5 अलग-अलग समुदाय के 221 बच्चे शिक्षा ले रहे हैं। इन सभी बच्चो की 7 तारीख से 12 तारीख तक लिखित परीक्षायें ली गई। मूल्यांकन में सभी बच्चों का शानदार प्रदर्शन रहा। मूल्यांकन प्रक्रिया पर लीफी संस्थापक रमन बहल कहते हैं एक महत्वपूर्ण कारण यह जानना है कि बच्चों को जो कुछ भी सीखना चाहिए, क्या वे सीख पा रहे हैं? दूसरी वजह एक अवधि विशेष में बच्चों की प्रगति के बारे में भी जानकारी प्राप्त करना है। यह पता लगाना है कि बच्चे की भिन्न-भिन्न विषय/क्षेत्रों में क्या उपलब्धियां रहीं?

समिति ने शिक्षा से वंचित बच्चों की शिक्षा के आर्थिक सहयोग के लिए चलाया अभियान

विचार समिति द्वारा सिविल लाइन में डोनेशन ड्राइव।

समिति द्वारा शहर में स्कूली शिक्षा से वंचित बच्चों की शिक्षा के लिए अंत्योदय शिक्षा मुहिम पिछले दो वर्षो से संचलित है। अंत्योदय शिक्षा मुहिम को आगे बढ़ाने के लिए सिविल लाइन इलाके में शैक्षिक आर्थिक दान अभियान चलाया गया। व्यक्तिगत संपर्क के माध्यम के साथ पंपलेट एवं वीडियो के माध्यम से जानकारी साझा की गई। इन बच्चों के भविष्य को उज्जवल करने वाले समाजसेवी जय कुमार जैन, शगुन जी, एकता समिति, देवेंद्र अहिरवार, हर्ष उपाध्याय, अमित, कृष्णा दुबे, आशीष गुप्ता, जय मेडिकल, सुनील, आकाश चौरसिया, सुबोध श्रीवास्तव, अरुण जैन आदि ने आर्थिक सहयोग दिया।

क्वेस्ट एलाइंस व विचार समिति के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय वर्चुअल प्रशिक्षण में 65 शिक्षकों ने लिया हिस्सा

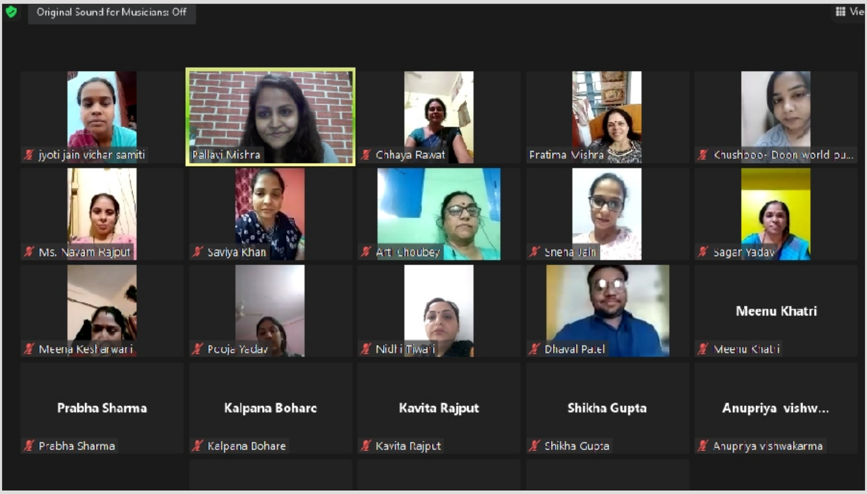

क्वेस्ट एलाइंस एवं विचार समिति के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय वर्चुअल शिक्षक प्रशिक्षण में इक्कीसवीं सदी के कौशलों, वर्तमान परिपेक्ष्य में शैक्षिक मुद्दों की आवश्यकता आधारित परिचर्चा में 65 शिक्षकों ने सहभगिता रखी। क्वेस्ट एलाइंस दिल्ली के अधिकारियों ने जानकारी देते हुए कहा वर्तमान समय में सभी प्रकार के कौशलों की बहुत आवश्यकता है। स्कूली शिक्षा में छात्रों पर पढ़ाई के दौरान पड़ने वाले बोझ को कम करना है। इसके लिए शिक्षकों के लिए कैसे तैयार किया जाये, बच्चों को आवश्यक कौशलों में पारंगत कर सकें। उनके लिए रोजगार के लिए तैयार कर सकें। एक प्रशिक्षक, शिक्षक, समन्वयक में क्या अंतर है ? शिक्षकों को यह समझाना है कि बच्चा केवल कोरा कागज नहीं होता। वह सब कुछ जानता है बस उसके ज्ञान में वृद्धि करवाने की आवश्यकता है। शिक्षक जो कुछ जानते हैं उन्हें और निखारने की आवश्यकता है। बच्चों को कैसे समझाया जा सकता है, उन्हें सीखने के लिए कैसे प्रेरित किया जा सकता है। शिक्षक भागीदारी एवं जिम्मेदारी के साथ बच्चों को नैतिक शिक्षा, भावनात्मक शिक्षा से जोड़ सकें। इसके साथ ही शिक्षण विधियों में परिवर्तन के रोचक ढंग से सीखने के दृष्टिकोण को पैदा करने की आवश्यकता है। बच्चों को डिजिटल शिक्षा से कैसे जोड़ना है, सभी बच्चों को खेल से जोड़कर सिखाने की आवश्यकता है। प्रशिक्षण में मुख्य 4 चरण पर कार्य किया जायगा। जिसमें नामांकन प्रक्रिया में 3 शिक्षक स्वयं/विभाग द्वारा चयनित होंगे। व्यवहारिक रूप से शिक्षकों के लिए प्रक्रिया अंतर्गत क्यों, कहां और कैसे से जोड़ना, कोर्स को पूरा करवाना, कल्पना आधरित तत्वों को महत्व देना, हैकथॉन से जोड़ना है। सभी शिक्षकों को 21वीं सदी के प्रशिक्षण का लगभग 3 महीने का प्रशिक्षण दिया जायगा।

क्वेस्ट एलायंस की स्थापना 2005 से शिक्षा प्रौद्योगिकी, नवाचार और सहयोग के माध्यम से सीखने के पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए कार्यरत है, मुख्य कार्यक्रम हैं - आनंदशाला, माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक विकास, माय क्वेस्ट, चेंज लीडर्स एकेडमी, क्वेस्ट 2 लर्न संचालित है।

शिक्षक प्रशिक्षण में ईश्वरी देवी इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल सागर, लिटिल स्टार शैलेश मेमोरियल हाई सेकेंडरी स्कूल सागर, डून वर्ल्ड पब्लिक स्कूल सागर, लर्निंग इनिशिएटिव फॉर इंडिया के शिक्षकों ने प्रशिक्षण लिया।

डॉ. हरीसिंह गौर की 153वीं जयंती के अवसर पर विश्वविद्यालय परिसर में कौशल विकास मेला में लगाया समिति ने गोमय उत्पादों का स्टॉल

विश्वविद्यालय परिसर में आयोजित कौशल विकास मेला में विचार समिति के पदाधिकारी व छात्र-छात्राएं।

डॉ हरीसिंह गौर की 153वीं जयंती के अवसर पर गौर उत्सव और सागर गौरव दिवस के अंतर्गत विश्वविद्यालय एवं सागर जिला प्रशासन के संयुक्त तत्तवावधान में दो दिवसीय कौशल विकाश मेला 2.0 का आयोजन गौर प्रांगण में किया गया। कौशल विकाश मेला 2.0 प्रबंधक प्रो. श्वेता यादव ने जानकारी देते हुये बताया कि विद्यार्थियों में उनके कौशलों के विकास के लिए विश्वविद्यालय द्वारा 19 विषय संचालित है। मेले में 20 दुकानें लगाई गई है। 'लोकल फॉर वोकल' आर्थिक स्वालंबन की ओर आगे बढ़ाना है। विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए उत्पादों के साथ स्थानीय क्षेत्रों सामाजिक संस्थाओ के साथ उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। विचार समिति ने कौशल विकास मेले में गोबर से बने उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए दिए, धूपबत्ती, मोमेंटो, झूमर, घड़ियां, आदि उत्पादों के साथ दुकान को सजाया। समिति कार्यकारी अध्यक्ष सुनीता अरिहंत ने गोबर से बने दियों का उद्देश्य साझा करते हुए कहा कि दियों का निर्माण जरूरतमंद महिलाओं के द्वारा जिनमें मोहल्ला विकास योजना एवं सहायता समूह की महिलाओं के माध्यम से लघु उद्योग के तहत स्वरोजगार को बढ़ावा देना है। पूजा प्रजापति एवं भाग्यश्री राय ने सभी के लिए गोबर से बने दियों की विशेषताओं से अवगत करवाया। उन्होंने बताया कि यह दिए गोबर से बने होने के बावजूद आग नहीं पकड़ते हैं, इसलिए पूर्ण सुरक्षित है । पानी में औसतन 45 मिनट से अधिक तैरते हुऐ जलते हैं। दिए के अवशेष को गमला, किचन, गार्डन में खाद के रूप मे उपयोग किया जा सकता है।

मीडिया कवरेज

दैनिक भास्कर सागर 21-11-2022

मंडे पॉजिटिव • लीफी चेंजमेकर्स फैलोशिप : लर्निंग इनिसेटिव फॉर इंडिया व विचार समिति के द्वारा चलाया जा रहा अभियान

जिन बच्चों को कोई अपने पास बैठाना नहीं चाहता उन्हें पढ़ा रहे 5 शिक्षक

भास्कर संवाददाता | सागर

स्कूल छोड़ने वाले पहली से पांचवी तक विद्यार्थियों में शिक्षा का अलख जगाने और उन्हें फिर से स्कूल भेजने के लिए शहर में अभियान चलाया जा रहा है। पिछले तीन माह से चल रहे इस अभियान के दौरान अब तक ऐसे 221 बच्चों का चयन पढ़ाई कराने के लिए किया गया है, जिन्हें कोई अपने पास बैठाना भी नहीं चाहता था। साथ ही इनके अभिभावक भी पढ़ाई के बजाय इनसे मजदूरी और कामधंधा कराना चाहते थे। यह अभियान लर्निंग इनिसिएटिव फॉर इंडिया (लीफी) तथा विचार समिति के संयुक्त तत्वाधान में चलाया जा रहा है। लीफी चेंजमेकर्स फैलोशिप नाम के इस अभियान के संचालन के लिए दोनों संस्थाओं ने पांच शिक्षकों की नियुक्ति की है। अभियान के दौरान इन शिक्षकों ने शहर के संत रविदास, भगतसिंह वार्ड, मढ़िया विट्ठलनगर तथा मड़देवरा गांव में पिछड़े इलाकों व गंदी बस्तियों का सर्वे किया। यहां सबसे ज्यादा बच्चे आदिवासी, पटेल और अहिरवार समाज के मिले, जिन्होंने या तो कक्षा 1 या फिर कक्षा 5वीं के बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। इन बच्चों को प्रेरित कर दोबारा पढ़ाई से जोड़ा गया है।

» सबसे बड़ी चुनौती पढ़ाई के लिए मनाना थी : मड़देवरा की ज्योति जैन बताती हैं कि 45 बच्चों को चयनित कर शिक्षित कर रही हैं। तीन महीने में इनके बौद्धिक विकास में अच्छा परिवर्तन है। सामाजिक भेदभाव के कारण जो बच्चे शिक्षा से अछूते रह गए उन्हें कोई पढ़ाने को तैयार नहीं था। जब पहली बार बच्चों की खोज की तो उनके माता-पिता से बात की। बताया बच्चों को निशुल्क पढ़ाऊंगी। उन्हें आश्चर्य हुआ। पिछड़े समुदाय से होने के कारण अन्य कोचिंग में जब भी वे पूछने जाते थे तो शिक्षक उन्हें पढ़ाने मना कर देते थे। उन्हें पढ़ाना तो दूर कोई अपने पास भी बिठाना नहीं चाहता था। पर आज वह सभी बच्चे सबके साथ खेलते व पढ़ते हैं। इस काम में सबसे बड़ी चुनौती बच्चों और उनके माता-पिता को पढ़ाई के लिए तैयार करना था।

» पढ़-लिखकर क्या करेंगे, इनकी शादी करना है : प्रियंका साहू संत रविदास वार्ड में 45 बच्चों को शिक्षित कर रही हैं। उन्होंने बताया अधिकांश बच्चों माता-पिता की आर्थिक परेशानियों के कारण शिक्षा छोड़ चुके थे। उन्हें पढ़ाई से जोड़ने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। यह शहरी क्षेत्र जरूर था, लेकिन गरीब तबकों के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कल्पना थी। अधिकांश बच्चे शादी-ब्याह या सामाजिक समारोहों में लाइटिंग का काम करते हैं। उनसे बात करने पर उन्होंने कहा कि पढ़ाई में मन नहीं लगता। परिवार वालों से बात की तो उनका कहना था कि अब बच्चे पढ़कर क्या करेंगे। उनकी शादी करनी है। उन्हें एक से 2 घंटे की क्लास में रोकना काफी कठिन था।

» लीफी का पाठ्यक्रम अच्छा, अब बच्चे खुद सीखने में समर्थ हो गए : काजल जैन बताती हैं कि लीफी का पाठ्यक्रम सीखो और खेलो बेहद अच्छा है। मैं पहले बहुत ही ज्यादा सख्त थी। मुझे लगता था कि बच्चों को अनुशासन के साथ जोड़ना काफी प्रभावकारी होगा। लेकिन जब बच्चों को इस पाठ्यक्रम से पढ़ाया तो उनमें जबरदस्त बदलाव आया। वे मनोरंजन के साथ पढ़ते, चीजों को करते, सीखते और फिर बताते हैं। उन्हें अब कोई कुछ भी जब पढ़ाता है मसलन शुद्ध लेख, अक्षर ज्ञान, गणित, कंप्यूटर वे सब कुछ सीखना चाहते हैं। गाना गाते हैं। डांस करते हैं और सीखते हैं।

» कोरोना ने छीन ली थी पढ़ाई : शिक्षक कविता यादव बताती हैं कि कोरोना की सबसे अधिक मार गरीब वर्गों के बच्चों पर पड़ी। उनके पास मोबाइल और लैपटॉप जैसी सुविधाएं नहीं थीं। इसलिए ऑनलाइन शिक्षा पद्धति से उनकी शिक्षा को जारी रखना बड़ी चुनौती थी। कोरोना के बाद हजारों बच्चों ने एक साथ स्कूल छोड़ा, जो पुनः स्कूल में नामांकित हुए लेकिन उनका शैक्षणिक स्तर बहुत कमजोर था। अभियान के तहत 41 बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। उन्हें अक्षर ज्ञान, आकृतियां और विभिन्न प्रकार की क्रियाएं से जोड़ना था।

» बच्चों के शैक्षणिक स्तर को परखा : पूजा मिश्रा ने बताया कि हमने सामान्य सर्वे के माध्यम से बच्चों के ज्ञानात्मक स्तर को परीक्षण के माध्यम से जांच की जिसके माध्यम से बच्चों की आवश्यकताओं शैक्षणिक स्तर को परखा और अलग-अलग बैच बनाकर उनकी शिक्षण प्रक्रिया को शुरू कर दिया था।

वर्चुअल शिक्षक प्रशिक्षण में 65 शिक्षक ने लिया हिस्सा

क्वेस्ट एलाइंस एवं विचार समिति ने किया था आयोजन

भास्कर संवाददाता | सागर

क्वेस्ट एलाइंस एवं विचार समिति के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय वर्चुअल शिक्षक प्रशिक्षण में 21वीं सदी के कौशलों, वर्तमान परिपेक्ष्य में शैक्षिक मुद्दों की आवश्यकता आधारित परिचर्चा हुई। इसमें 65 शिक्षकों ने सहभागिता की। क्वेस्ट एलाइंस दिल्ली के अधिकारियों ने कहा कि वर्तमान समय में सभी प्रकार के कौशलों की बहुत आवश्यकता है। स्कूली शिक्षा में छात्रों पर पढ़ाई के दौरान पड़ने वाले बोझ को कम करना है। इसके लिए शिक्षकों के लिए कैसे तैयार किया जाए और बच्चों को आवश्यक कौशलों में पारंगत कर सकें। उनके लिए रोजगार तैयार कर सकें। एक प्रशिक्षक, शिक्षक, समन्वयक में क्या अंतर है? शिक्षकों को यह समझाना कि बच्चा केवल कोरा कागज नहीं होता। वह सब कुछ जानता है बस उसके ज्ञान में वृद्धि करने की आवश्यकता है। शिक्षक जो कुछ जानते हैं, उन्हें और निखारने की आवश्यकता है। बच्चों को कैसे समझाया जा सकता है? उन्हें सीखने के लिए कैसे प्रेरित किया जा सकता है। शिक्षक की भागीदारी एवं जिम्मेदारी के साथ नैतिक

शिक्षा, भावनात्मक शिक्षा से जोड़ सकें। इसके साथ ही शिक्षण विधियों में परिवर्तन के रोचक ढंग से सीखने के दृष्टिकोण को पैदा करने की आवश्यकता है। बच्चों को डिजिटल शिक्षा से कैसे जोड़ना है, सभी बच्चों को खेल से जोड़कर सिखाने की आवश्यकता है।

यह है क्वेस्ट एलायंस का उद्देश्य

क्वेस्ट एलायंस की स्थापना 2005 में हुई थी। तब से यह शिक्षा प्रौद्योगिकी, नवाचार और सहयोग के माध्यम से सीखने के पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने के लिए कार्यरत है। इसके तहत आनंदशाला, माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक विकास, माय क्वेस्ट, चेंज लीडर्स एकेडमी, क्वेस्ट-2 लर्न संचालित हैं। शिक्षक प्रशिक्षण में शहर के सरकारी और निजी स्कूलों के शिक्षकों ने प्रशिक्षण लिया।

सागर, आचरण संवाददाता।

65 शिक्षकों ने लिया हिस्सा

सागर, आचरण। क्रेस्ट एलाइंस एवं विचार समिति के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय वर्चुअल शिक्षक प्रशिक्षण में इक्कीसवीं सदी के कौशलों, वर्तमान परिपेक्ष्य में शैक्षिक मुद्दों की आवश्यकता आधारित परिचर्चा में 65 शिक्षकों सहभगिता रखी। क्रेस्ट एलाइंस दिल्ली के अधिकारियों ने जानकारी देते हुए कहा वर्तमान समय में सभी प्रकार के कौशलों की बहुत आवश्यकता है। स्कूली शिक्षा में छात्रों पर पढ़ाई के दौरान पड़ने वाले बोझ को कम करना है। इसके लिए शिक्षकों के लिए कैसे तैयार किया जाय, बच्चो को आवश्यक कौशलों में पारंगत कर सके। उनके लिए रोजगार के लिए तैयार कर सकें। एक प्रशिक्षक, शिक्षक, समन्वयक क्या अंतर है ? शिक्षकों को यह समझाना कि बच्चा केवल कोरा कागज नहीं होता। वह सब कुछ जानता है बस उसके ज्ञान में वृद्धि करवाने की आवश्यकता है। शिक्षक जो कुछ जानते हैं उन्हें और निखारने की आवश्यकता है। बच्चों को कैसे समझाया जा सकता है, उन्हें सीखने के लिए कैसे प्रेरित किया जा सकता है।

तीन दिनी वर्चुअल प्रशिक्षण में 65 शिक्षकों ने लिया हिस्सा

आधुनिक शिक्षा सहित अन्य विषयों की दी जानकारी

पीपुल्स संवाददाता • सागर
मो.नं. 9826021098

क्वेस्ट एलाइंस एवं विचार समिति के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय वर्चुअल शिक्षक प्रशिक्षण में 65 शिक्षकों ने लिया हिस्सा। प्रशिक्षण में इक्कीसवीं सदी के कौशलों, वर्तमान परिपेक्ष्य में शैक्षिक मुद्दों की आवश्यकता आधारित परिचर्चा मे क्वेस्ट एलाइंस दिल्ली के अधिकारियों ने जानकारी देते हुए कहा वर्तमान समय में सभी प्रकार के कौशलों की बहुत आवश्यकता है। स्कूली शिक्षा में छात्रों पर पढ़ाई के दौरान पड़ने वाले बोझ को कम करना है। इसके लिए शिक्षकों के लिए कैसे तैयार किया जाय, बच्चो को आवश्यक कौशलों में पारंगत कर सके। उनके लिए रोजगार के लिए तैयार कर सकें। एक प्रशिक्षक, शिक्षक, समन्वयक क्या अंतर है ? शिक्षकों को यह समझाना कि बच्चा केवल कोरा कागज नहीं होता। वह सब कुछ जानता है बस उसके ज्ञान में वृद्धि करवाने की आवश्यकता है। शिक्षक जो कुछ जानते हैं उन्हें और निखारने की आवश्यकता है।

तीन दिवसीय वर्चुअल शिक्षक प्रशिक्षण में 65 शिक्षकों ने लिया हिस्सा

सागर, देशबन्धु। क्रेस्ट एलाइंस एवं विचार समिति के संयुक्त तत्वाधान में तीन दिवसीय वर्चुअल शिक्षक प्रशिक्षण में इकीसवीं सदी के कौशलों, वर्तमान परिपेक्ष्य में शैक्षिक मुद्दों की आवश्यकता आधारित परिचर्चा में 65 शिक्षकों सहभगिता रखी। क्रेस्ट एलाइंस दिल्ली के अधिकारियों ने जानकारी देते हुए कहा वर्तमान समय में सभी प्रकार के कौशलों की बहुत आवश्यकता है। स्कूली शिक्षा में छात्रों पर पढ़ाई के दौरान पड़ने वाले बोझ को कम करना है। इसके लिए शिक्षकों के लिए कैसे तैयार किया जाय, बच्चो को आवश्यक कौशलों में पारंगत कर सके। उनके लिए रोजगार के लिए तैयार कर सकें। एक प्रशिक्षक, शिक्षक, समन्वयक क्या अंतर है शिक्षकों को यह समझाना कि बच्चा केवल कोरा कागज नहीं होता। वह सब कुछ जानता है बस उसके ज्ञान में वृद्धि करवाने की आवश्यकता है। शिक्षक जो कुछ जानते हैं उन्हें और निखारने की आवश्यकता है। बच्चों को कैसे समझाया जा सकता है, उन्हें सीखने के लिए कैसे प्रेरित किया जा सकता है। शिक्षक भागीदारी एवं जिम्मेदारी के साथ नैतिक शिक्षा, भावनात्मक शिक्षा से जोड़ सके। प्रशिक्षण में मुख्य 4 चरण पर कार्य किया जायगा। शिक्षक प्रशिक्षण में ईश्वरी देवी इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल सागर, लिटिल स्टार शैलेश मेमोरियल हाई सेकेंडरी स्कूल सागर, दून वर्ल्ड पब्लिक स्कूल सागर, लर्निंग इनिशिएटिव फॉर इंडिया के शिक्षकों ने प्रशिक्षण लिया।

सहयोगी संस्थान

O.P. Jindal Global University
A Private University Promoting Public Service

TISS
Tata Institute Of Social Sciences

UPES
UNIVERSITY OF THE FUTURE

BHU
Banaras Hindu University

QUEST ALLIANCE

Goodera

ConnectAID
The International Solidarity Network

learning initiatives for india

meraadhikar
one nation. one platform

Lyvefresh®

TechPose

BENNETT UNIVERSITY
TIMES OF INDIA GROUP

ACADEMIA FOR SUSTAINABLE DEVELOPMENT

POLICY RESEARCH FOUNDATION
PRF

NCD NAVJIVAN CENTER FOR DEVELOPMENT
We Design Your Growth Story

danamojo
experience the magic of giving

IIMT
GROUP OF COLLEGES
Greater Noida • Meerut
— Aim For Excellence —

Dr. H.S. Gour University
Sagar [M.P.]

THE ART OF LIVING®

Rotary
Club of Sagar

STEP-AHEAD
Fellowship
Preparation–Support
MGNF, Gandhi Fellow,
Urban Fellow, SBI
Youth, TFI etc.

INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT
ROHTAK

भारत विकास परिषद
Bharat Vikas Parishad
Sagar [M.P.]

ISRN

Edu-Vitae
Services
JOIN! LEARN! ACHIEVE!

India is us!
i2u Social Foundation

संजीवनी बाल आश्रम

For HER Foundation
Hygiene | Empowerment | Respect

॥विचार समिति॥

(स्थापना वर्ष 2003)

निवेदन

आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक मात्रा में दान देकर इस मुहिम को आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

दान राशि बैंक खाते में डालने हेतु जानकारी इस प्रकार है।

Bank a/c name- VicharSamiti

Bank- State Bank of India

Account No.- 37941791894

IFSC code- SBIN0000475

Paytm/ Phonepe/ Googlepay/ upi

आदि दान करने के लिए नीचे दिए गए

QR कोड को स्कैन करें.

BHIM UPI

VICHAR SAMITI

Pay With Any App

G Pay Paytm PhonePe

WhatsApp amazon

150+ Apps

Powered By: BharatPe

- हम से जुड़ें -

+91 91654 22888

linkedin.com/in/vichar-samiti

samiti.vichar@gmail.com

www.vicharsamiti.in

Sagar, Madhya Pradesh India

Ph. No. : 9575737475, 9009780042, 07582-224488

Address : 258/1, Malgodam Road, Tilakganj Ward, Behind Adinath Cars Pvt. Ltd, Sagar (M.P.) 470002